CBSE कक्षा 12 बाजार के प्रमुख रूप तथा पूर्ण प्रतियोगिता में किमत निर्धारण
अर्थशास्त्र महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

एक अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. बाजार संतुलन क्या है?

उत्तर- बाजार संतुलन से अभिप्राय उस अवस्था से होता है जब बाजार माँग बाजार पूर्ति के बराबर होती है।

प्र. 2. पूर्ण प्रतियोगिता को परिभाषित करें।

उत्तर- पूर्ण प्रतियोगिता से अभिप्राय एक ऐसी बाजार संरचना से होता है जहाँ बहुत बड़ी संख्या में क्रेता और विक्रेता बाजार शक्तियों द्वारा निर्धारित कीमत पर समरूप वस्तु का लेन-देन करते हैं।

प्र. 3. सगुट (कार्टेल) या व्यापार समूह क्या है?

उत्तर- व्यापार समूह कुछ फर्मों का समूह होता है जो आपस में मिलकर अपने उत्पादन और कीमत को तय करते हैं ताकि एकाधिकारी शक्ति का प्रयोग कर सके।

प्र. 4. 'उच्चतम कीमत' की परिभाषित करें?

उत्तर- उच्चतम कीमत से अभिप्राय एक वस्तु की अधिकतम कीमत को संतुलन कीमत से कम स्तर पर तय करने से होता है।

प्र.5. एक वस्तु की अतिरेग माँग (अधिक माँग) का अर्थ बताइये?

उत्तर- अतिरेक माँग से अभिप्राय उस अवस्था से होता है जब प्रचलित बाजार कीमत पर माँगी गई मात्रा पूर्ति की गई मात्रा से अधिक होती है।

3-4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. एक पूर्णतया प्रतियोगी बाजार में क्रेताओं की बड़ी संख्या से क्या परिणाम निकलता है? समझाइए।

उत्तर- इसका परिणाम यह होता है कि कोई भी अकेला क्रेता स्वयं बाजार कीमत को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं होता क्योंकि वह वस्तु के कुल उत्पादन की नगण्य मात्रा खरीदता है।

प्र. 2. एक अल्पाधिकार बाजार में फर्में परस्पर निर्भर क्यों रहती हैं? समझाइए।

उत्तर- फर्मो की परस्पर निर्भरता का कारण यह है कि कोई भी फर्म कीमत और उत्पादन के बारे में कोई निर्णय विरोधी फर्मो की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखकर ही लेती है।

प्र. 3 .पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्मो के प्रवेश और निकासी की स्वतंत्रता के परिणाम समझाइए।

उत्तर- उद्योग में मौजूद फर्म जब असामान्य लाभ प्राप्त कर रही होती है तो फर्म प्रवेश करती है, उससे उद्योग का उत्पादन बढ़ जाता है और बाजार कीमत घट जाती है। फलस्वरूप लाभ घट जाते हैं नई फर्मो का प्रवेश तब तक जारी रहता है जब तक कि असामान्य लाभ घटकर सामान्य लाभ (शून्य) न हो जाए। जब फर्मो की हानि होती है तो वे उद्योग को छोड़ने लगती है और हानि घटने लगती है। फर्मो का उद्योग से जाएगा तब तक जारी रहता है जब तक की हानि समाप्त न हो जाए।

प्र. 4. पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में बाजार के बारे में पूर्ण ज्ञान के परिणाम समझाइए।

उत्तर- बाजार के बारे में पूर्ण जानकारी का अर्थ है कि सभी क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार कीमत की पूर्ण जानकारी है। अतः कोई भी फर्म बाजार कीमत से भिन्न कीमत नहीं ले सकती और कोई भी क्रेता बाजार कीमत से अधिक कीमत नहीं देगा। अतः बाजार में एक ही कीमत रहेगी।

प्र. 5. एकाधिकार प्रतियोगिता को अन्तर्गत माँग वक्र एकाधिकार को अन्तर्गत माँग वक्र की तुलना में अधिक लोचदार क्यों होता है? समझाइए।

उत्तर- जिस वस्तु का निकटतम स्थानापन्न होता है उसकी माँग अधिक लोचदार होती है तथा एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत उत्पादित वस्तु का निकटतम स्थानापन्न होता है। अतः माँग वक्र अधिक लोचदार होता है तथा एकाधिकार वस्तु का निकटतम स्थानापन्न नहीं होता इसलिए माँग वक्र कम लोचदार होता है।

प्र. 6. एक फर्म पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत स्वीकारक तथा एकाधिकार में कीमत निर्धारक क्यों होती है? संक्षेप में समझाइए।

उत्तर- पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत स्वीकारक होती है। इसके निम्नलिखित कारण हैं-

1. **फर्मों की संख्या:** पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मों की संख्या इतना अधिक होती है कि कोई भी एक फर्म अपनी स्वयं की पूर्ति में कोई प्रभावपूर्ण परिवर्तन नहीं कर सकती। अतः बाजार कीमत अप्रभावित रहती है।
2. **समरूप वस्तु:** पूर्ण प्रतियोगिता में एक उद्योग की सभी फर्मों का उत्पादन समरूप होता है अतः कीमत भी समान रहती है।
3. **पूर्ण जानकारी:** सभी क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार कीमत की पूर्ण जानकारी होती है, अतः कोई भी फर्म बाजार कीमत से भिन्न कीमत नहीं ले सकती। अतः बाजार में एक ही कीमत होगी।

एकाधिकार में फर्म कीमत निर्धारक होती है। इसके निम्नलिखित कारण हैं-

1. एकाधिकार में एक ही फर्म होती है। अतः पूर्ति पर उसका पूर्ण नियन्त्रण होता है।
2. एकाधिकार में वस्तु का कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता। इसलिए वस्तु की माँग कम लोचदार होती है।
3. नई फर्मों के प्रवेश पर कानूनी, तकनीकी तथा प्राकृतिक प्रतिबंध होते हैं इसलिए बाजार पूर्ति में वृद्धि का कोई डर नहीं होता।

प्र. 7. कीमत विभेद तथा वस्तु विभेद के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कीमत विभेद: वह स्थिति है जिसमें एकाधिकारी एक ही वस्तु के विभिन्न क्रेताओं से भिन्न-भिन्न कीमत लेता है। सामान्यतया ये लाभ को अधिकतम करने के लिए किया जाता है।

वस्तु विभेद: विभेद वह स्थिति है जिसमें एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत विभिन्न उत्पादन अपनी वस्तु को उसकी बनावट आकार, पैकिंग, ट्रेडमार्क या ब्राण्ड नाम के अनुसार विभेदीकृत या भिन्न प्रकार का बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह वे इसलिए करते हैं ताकि बाजार में विरोधी फर्मों से ग्राहकों को अपने उत्पाद की ओर आकर्षित कर सके।

प्र. 8. पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार में अन्तर निम्नलिखित है-

- **पूर्ण प्रतियोगिता**
    1. क्रेताओं तथा विक्रेताओं की अधिक संख्या
    2. वस्तु समरूप होती है।
    3. फर्मों को प्रवेश तथा बहिर्गमन की स्वतन्त्रता।
    4. कीमत पर कोई नियन्त्रण नहीं होता।
- एकाधिकार
    1. एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता।
    2. वस्तु का निकट स्थानापन्न नहीं होता।
    3. फर्मों को प्रवेश पर प्रतिबन्ध।
    4. कीमत पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं होता।

प्र. 9. एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता में भेद स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता में भेद निम्नलिखित है-

- **एकाधिकार**
  1. एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता।
  2. वस्तु का निकट स्थानापन्न नहीं होता।
  3. फर्मों को प्रवेश पर प्रतिबन्ध।
  4. विक्रय लागत शून्य
- **एकाधिकारी प्रतियोगिता**
  1. क्रेताओं तथा विक्रेताओं की अधिक संख्या
  2. विभेदीकृत वस्तु होती है।
  3. फर्मों के प्रवेश तथा बहिर्गमन की स्वतंत्रता।
  4. ऊँची विक्रय लागतें होती हैं।

प्र. 10. अल्पाधिकार किसे कहते हैं? अल्पाधिकार की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर- अल्पाधिकार: यह बाजार का वह रूप है जिसमें किसी वस्तु के कुछ ही बड़े विक्रेता और बड़ी संख्या में क्रेता होते हैं। कीमत तथा उत्पादन नीति के सन्दर्भ में विक्रेताओं के बीच अन्तनिर्भरता पायी जाती है।
अल्पाधिकार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. कुछ ही फर्में
2. अन्तनिर्भरता की ऊँची मात्रा
3. गैर-कीमत प्रतियोगिता
4. फर्मों के प्रवेश की बाधाएँ
5. व्यापार-गुटों का निर्माण

6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. सहयोगी और गैर-सहयोगी अल्पाधिकार को बीच अन्तर बताइए। समझाइए कि कैसे अल्पाधिकारी फर्म कीमत और उत्पादन के बारे में निर्णय लेने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहती हैं?

उत्तर- सहयोगी अल्पाधिकारी को अन्तर्गत फर्म कीमत और उत्पादन का स्तर निर्धारित करते समय एक-दूसरे के साथ सहयोग करती है जबकि गैर-सहयोगी अल्पाधिकार में फर्म एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्द्धा करती है। प्रत्येक फर्म अपने उत्पादन और कीमत के बारे में निर्णय लेते समय अपनी विरोधी फर्मो की सम्भव प्रतिक्रिया को ध्यान में रखती है। अतः फर्मो में परस्पर निर्भरता होती है। अन्य फर्मो की सम्भव प्रतिक्रिया के कारण अपने उत्पादन व कीमत में परिवर्तन करने के निर्णय पर पुनः विचार करना पड़ सकता है।

प्र . 2. एक वस्तु बाजार में है। उस वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है। इस परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभावों की श्रृंखला की व्याख्या कीजिए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर- माँग में वृद्धि के कारण माँग वक्र D_1 दायीं ओर खिसक जाती है। रेखाचित्र में D_2 माँग वक्र है। इससे दी हुई कीमत P_1 पर E_1F के बराबर माँग आधिक्य हो जाता है। इस कीमत पर उपभोक्ता वस्तु की उतनी मात्रा खरीदना चाहते हैं। इसलिए क्रेताओं में प्रतिस्पर्द्धा होती है जिससे कीमत बढ़ जाती है।

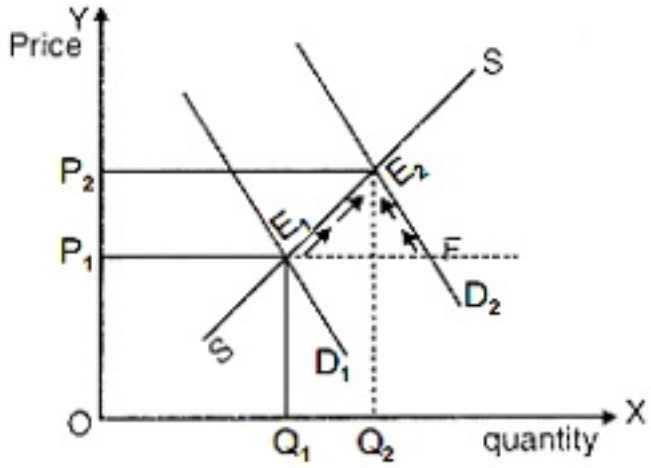

कीमत के बढ़ने से माँग घटने लगती है और पूर्ति बढ़ने लगती है जैसा कि रेखाचित्र में दिखाया गया है। इसमें परिवर्तन तब तक होते रहेंगे जब तक कि माँग और पूर्ति बराबर न हो जाए। माँग बढ़कर OQ_2 और कीमत बढ़कर OP_2 हो जाती है।

प्र. 3. एक वस्तु बाजार सन्तुलन में है। उस बाजार कीमत पर वस्तु की माँग तथा पूर्ति में एक साथ 'कमी' होती हैं। इसका प्रभाव समझाइए।

उत्तर- तीन संभावनाएँ हैं-

1. यदि माँग में सापेक्षिक (प्रतिशत) कमी पूर्ति में कमी से अधिक है तो कीमत घटेगी। बाजार में पूर्ति आधिक्य होने के कारण कीमत घटेगी।
2. यदि माँग में सापेक्षित (प्रतिशत) कमी पूर्ति में कमी से कम है तो कीमत बढ़ेगी। बाजार में माँग आधिक्य होने के कारण कीमत बढ़ेगी।
3. यदि माँग में सापेक्षित (प्रतिशत) कमी पूर्ति में कमी के बराबर है तो कीमत अपरिवर्तित रहेगी। कीमत अपरिवर्तित रहने का कारण यह है कि बाजार में न तो माँग आधिक्य है और न ही पूर्ति आधिक्य।

प्र. 4. समझाइए कि किसी वस्तु की सन्तुलन कीमत उसी उत्पादन स्तर पर क्यों निर्धारित होती है जिस पर उस वस्तु की माँग और पूर्ति बराबर होती है?

उत्तर- यदि माँग पूर्ति से अधिक है तो क्रेता उतनी वस्तुएँ नहीं खरीद पाएँगे, जितनी वह खरीदना चाहते हैं अतः क्रेताओं में प्रतिस्पर्द्धा होगी, जिसके परिणामस्वरूप कीमत बढ़ने लगती है, जिसके कारण माँग गिरने लगती है तथा पूर्ति बढ़ने लगती है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि माँग और पूर्ति बराबर न हो जाए।
इसके विपरीत यदि पूर्ति, माँग से अधिक है तो विक्रेता उतनी वस्तुएँ नहीं बेच पायेंगे। जितनी वह बेचना चाहते हैं। अतः विक्रेताओं में प्रतिस्पर्द्धा होगी जिसके तथा पूर्ति गिरने लगती है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक कि माँग और पूर्ति बराबर न हो जाए।
अतः वस्तु की सन्तुलन कीमत उसी उत्पादन स्तर पर निर्धारित होती है जिस पर वस्तु की माँग तथा पूर्ति बराबर होती है।